ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

सतत् जीविकोपार्जन योजना
से जुड़कर
गुड़िया चली स्वावलंबन की राह
(पृष्ठ – 02)

स्वरोजगार की ओर
एक मजबूत कदम
(पृष्ठ – 03)

सतत् जीविकोपार्जन योजना
जिला एवं राज्य स्तरीय गतिविधियां
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – जनवरी 2023 ।। अंक – 18

सतत् जीविकोपार्जन योजना से अत्यंत गरीब परिवारों के चेहरे पर आई मुस्कान

बिहार सरकार द्वारा राज्य में पूर्ण शराबबंदी की घोषणा के उपरांत राज्य भर में खुशी एवं उत्साह का माहौल था। हालांकि समाज के एक तबके को सरकार के इस फैसले से निराशा हुई थी। दरअसल पूर्ण शराबबंदी की वजह से परंपरागत रूप से देशी शराब या ताड़ी के उत्पादन एवं बिक्री से जुड़े परिवारों के समक्ष रोजी–रोटी का संकट उत्पन्न हो गया था। ऐसे में उनकी चिंता वाजिब थी। राज्य सरकार ने इनकी चिंताओं को समझा और समाधान की दिशा में कदम बढ़ाया। पूर्ण मद्य निषेध की वजह से प्रभावित हुए इन परिवारों को स्थायी आजीविका उपलब्ध कराने के उद्देश्य से बिहार सरकार ने 05 अगस्त 2018 को 'सतत् जीविकोपार्जन योजना' की शुरुआत की। योजना के तहत परंपरागत रूप से देशी शराब या ताड़ी के उत्पादन एवं बिक्री से जुड़े परिवारों के साथ–साथ अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अन्य समुदाय के अत्यंत निर्धन परिवारों को भी शामिल किया गया है। सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत जीविका सामुदायिक संगठनों के माध्यम से लक्षित परिवारों की पहचान, इनका वित्तीय पोषण, क्षमतावर्द्धन और आजीविका संवर्द्धन के साथ–साथ निरंतर सहयोग किया जाता है। सतत् जीविकोपार्जन योजना का क्रमिक दृष्टिकोण, रणनीतिक क्रियान्वयन और निरंतर सहयोग की रणनीति की वजह से लाखों परिवारों के लिए यह वरदान साबित हुई है। योजना के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन का ही परिणाम है कि आज लाखों अत्यंत निर्धन परिवार विकास की मुख्य धारा में शामिल होते हुए धीरे–धीरे स्वावलंबन की ओर अग्रसर हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित इन लाखों परिवारों के चेहरे पर आई मुस्कान देखकर योजना की सफलता का सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना की सफलता ने बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों की तस्वीर बदल दी है। कभी अत्यंत दयनीय स्थिति में जीवन–यापन करने वाले परिवारों या देशी शराब एवं ताड़ी के उत्पादन और बिक्री पर निर्भर रहने वाले परिवारों ने अब योजना की मदद से स्थायी आजीविका के साधन विकसित कर लिए हैं। योजना के तहत इन परिवारों को इतना हुनरमंद बना दिया गया है कि इनके द्वारा ग्रामीण स्तर पर छोटे–छोटे उद्यम, दुकान या अन्य आजीविका गतिविधियों का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। इन आजीविका गतिविधियों से प्राप्त आय से वे अपने परिवार का सही तरीके से पालन–पोषण कर रहे हैं और आत्मसम्मान के साथ जीवन जी रहे हैं। सही मायने में सतत् जीविकोपार्जन योजना ने बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में बदहाल जीवन जी रहे अत्यंत निर्धन परिवारों को आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने की राह दिखाई है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों की तस्वीर बदल रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में योजना की सफलता को देखते हुए इस योजना का विस्तार अब राज्य के शहरी क्षेत्रों में भी करने का निर्णय लिया गया है। अर्थात राज्य के शहरी क्षेत्र में रहने वाले अत्यंत निर्धन परिवारों को भी अब सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ते हुए इन्हें स्थायी आजीविका के साधन उपलब्ध कराए जाएंगे।

सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत अब तक 1,55,212 परिवारों को चिन्हित किया गया है। इनमें से 12,819 परिवार देशी शराब एवं 30,657 परिवार परंपरागत रूप से ताड़ी के उत्पादन और बिक्री से जुड़े थे। चिन्हित परिवारों में से 1,46,156 परिवारों के लिए आजीविका परिसंपत्तियों का सृजन करते हुए इन्हें जीविकोपार्जन गतिविधि से जोड़ दिया गया है। साथ ही 1 लाख 39 हजार से अधिक परिवारों को जीविकोपार्जन अंतराल राशि हस्तांतरित की गई है। चयनित परिवारों के क्षमतावर्धन, आजीविका संवर्धन एवं सरकारी योजनाओं के साथ जुड़ाव हेतु 5,000 मास्टर संसाधन सेवियों का चयन किया गया है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से आसान हुई जीने की राह

औरंगाबाद जिले के हसपुरा प्रखंड के ताल पंचायत में फूल कुँवर रहती हैं। गाँव में आज फूल कुंवर की अपनी अलग पहचान है। कड़ी मेहनत के बल पर वे आर्थिक रूप से मजबूत हुई हैं और अपने परिवार का भरण–पोषण भी सही तरीके से कर रही हैं।

फुल कुँवर के पति का लीवर ज्यादा शराब पीने के कारण खराब हो गया था और अन्ततः उनका निधन भी हो गया था। फूल कुँवर के उपर अचानक मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। अब फूल कुँवर के ऊपर पाँच पुत्री एवं दो पुत्र के लालन–पालन की जिम्मेवारी आ गई। धीरे–धीरे इनके परिवार की आर्थिक स्थिति काफी दयनीय हो गयी, क्योंकि इन्हें न तो अपने और न ही पराये व्यक्तियों ने किसी भी प्रकार का मदद दिया। काफी दिनों तक संघर्षपूर्ण जीवन बिताने के बाद सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रूप में इनका चयन सी०आर०पी द्वारा 13 अक्टूबर 2019 को किया गया। सूक्ष्म नियोजन के बाद फूल कुँवर को किराना दुकान खोलने के लिए सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत आर्थिक मदद दी गई। फिर मानो फूल कुँवर के पैर में पंख लग गए। फूल कुँवर ने अपने गाँव में ही किराने की दुकान का संचालन प्रारंभ कर दिया। फूल कुँवर अपनी दुकान में कड़ी मेहनत करने लगी और साथ ही साथ बचत कर के अपनी दुकान की पूंजी भी बढ़ाने लग गई। अब वह अपनी दुकान में पकौड़ा एवं अंडा भी रखने लगी है।

एक वर्ष बाद फुल कुँवर ने बकरी पालना भी शुरू कर दिया। आज उनके पास दस बकरी है। कठिन परिश्रम के बाद फूल कुँवर आज अपना पारिवारिक जीवन बेहतर ढंग से जी रही हैं और परिवार का भरण–पोषण भी बेहतर तरीके से कर रही हैं। किराना दुकान एवं बकरी पालन से होने वाली आमदनी से फुल कुँवर अपनी बेटियों की शादी भी अच्छे परिवार में कर चुकी हैं और चार बच्चों को पढ़ा रही हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर गुड़िया चली स्वावलंबन की राह

शेखपुरा जिले के सदर प्रखंड अंतर्गत मेहूंस गांव की रहने वाली 27 वर्षीय गुड़िया देवी सतत् जीविकोपार्जन योजना की मदद से किराना दुकान का संचालन कर स्वावलंबन की राह में आगे बढ़ चुकी हैं। वर्ष 2019 में सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर इन्होंने किराना दुकान का संचालन कर गृहस्थी संभालने लगी और अपने दिव्यांग पति को एक साइकिल खरीदकर उपहार में दिया। उनके पति एक निजी विद्यालय में पढ़ाने का काम करते हैं। दोनों मिलकर अपने बच्चों का लालन–पालन सही तरीके से कर रहे हैं।

एक समय गुड़िया की स्थिति काफी दयनीय थी। वह बताती हैं कि– 'वह पहले कोई रोजगार नहीं करती थीं। घर पर ही पूरा दिन बच्चों की देख–रेख में बीत जाता था। पति भी आस–पास के बच्चों को ट्यूशन पढ़ा कर किसी तरह घर चलाने में सहयोग प्रदान करते थे लेकिन तमाम प्रयास के बाद भी उनके घर की आर्थिक स्थिति काफी दयनीय हो गयी थी। इतनी गरीबी थी कि दो वक्त के भोजन के लिए भी उन्हें सोचना पड़ता था।

गुड़िया दीदी को सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़कर मौसम जीविका महिला ग्राम संगठन की दीदियों ने उन्हें एक किराना दुकान की शुरुआत करवायी। देखते ही देखते उनके आर्थिक स्थिति में बदलाव आना शुरू हो गया। आज दीदी अपनी दुकान को अच्छे से चला रही हैं और बच्चों को बेहतर शिक्षा के लिए स्कूल भेज रही हैं। दीदी कहती हैं कि ''आमदनी से दो पैसा बचत करके पूरे परिवार के खान–पान में सुधार लायी हैं। पति को स्कूल जाने में दिक्कत होती थी तो पैसे बचत कर उनके लिए एक साइकिल खरीद लिया। फिर दो गाय खरीदी जिससे घर की जरूरत पूरी करने के साथ–साथ आस–पास के लोगों को दूध बेचती हैं। उससे भी कुछ आमदनी हो जाती है। अब पूरा परिवार खुशी से जीवन यापन कर रहा है।''

सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़ने के बाद पति के साथ मिलकर गुड़िया महीने में 10 हजार रुपए से अधिक की आमदनी कर रही हैं। आर्थिक स्थिति में बदलाव के बाद गुड़िया का परिवार खुशहाल है।

एसजेवाई की मदद से साजन ने शुरू किया अपना कारोबार

किशनगंज जिला के ठाकुरगंज प्रखंड की रहने वाली साजन दीदी ने सतत् जीविकोपार्जन योजना की मदद से दुकान खोला है। दीदी बताती हैं कि 'उनके लिए अपना व्यवसाय शुरू करना किसी चुनौती से कम नहीं था। लेकिन जीविका की मदद से उन्हें एसजेवाई योजना का लाभ मिला। जिससे वह आज अपना काम करने के साथ–साथ सम्मानजनक जीवन जी रही हैं।'

दीदी बताती हैं कि '12 साल पहले उनके पति का देहांत हो गया था। वे घर में अकेले कमाने वाली थी। पति के देहांत के बाद परिवार को आर्थिक समस्या से गुजरना पड़ रहा था। घर चलाने के साथ–साथ उन पर एक बेटी के परवरिश की जिम्मेदारी भी थी। शुरुआत में किसी तरह मजदूरी कर के दो वक्त की रोटी मिल पाती थी। लेकिन इससे परिवार की जरूरतें पूरी नहीं हो पा रही थी। इन्हीं सब हालातों के बीच एक दिन उन्हें स्वयं सहायता समूह की बैठक में सतत् जीविकोपार्जन योजना के बारे में जानकारी मिली।' दीदी की आर्थिक स्थिति को देखते हुए ग्राम संगठन में उनकी चर्चा की गई। सीआरपी दीदी द्वारा इनके घर का भ्रमण किया गया। और फिर सतत् जीविकोपार्जन योजना के मानकों के अनुरूप पाए जाने पर इस योजना के लाभार्थी के रूप में इनका चयन किया गया।

दीदी बताती हैं कि 'उन्हें दुकान से महीने में लगभग 10 हजार रुपए की आमदनी हो जाती है।' दीदी ने दुकान की कमाई से बकरी और मुर्गी पालन का काम भी शुरू किया है। साथ ही दुकान की कमाई से घर का मरम्मत भी कराया है। आज उन्हें दुकान की कमाई से घर चलाने में बहुत मदद मिल रही है। साथी ही बेटी को पढ़ाने–लिखाने में भी सहायता मिल रही है। दीदी ने बताया कि पहले उन्हें दो वक्त की रोटी की व्यवस्था करने में भी दिक्कत हो रही थी, वहीं अब अपनी दुकान होने के कारण घर चलाने के साथ–साथ बेटी को अच्छी शिक्षा देने में वे सक्षम हो पा रही हैं।

स्वरोजगार की ओर एक मजबूत कदम

गीता देवी सारण जिले के गरखा प्रखण्ड के गरखा गाँव की रहने वाली है। गीता देवी के पति एवं ससुर दोनों का गरखा मे ही देशी शराब एवं ताड़ी का व्यवसाय था, जिससे उनके परिवार का भरण पोषण होता था। देशी शराब पीने के कारण हुई बीमारी से लड़ते हुए उनके पति का देहांत हो गया। गीता देवी पहले से ही पति के इलाज के दौरान कर्ज में डूब चुकी थी और अचानक उनके पति के मृत्यु ने परिवार को बेसहारा कर दिया। दु:खों का पहाड़ ऐसा टूटा कि दीदी का परिवार दो वक्त के खाने के लिए भी मोहताज हो गया।

वर्ष 2020 के फ़रवरी में गरखा प्रखण्ड के ग्राम गरखा में सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत हो चुकी थी। सीआरपी टीम द्वारा सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभुकों का चयन किया जा रहा था। इसी क्रम में गीता देवी का चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत किया गया। योजना के तहत् शुरुआत में दस हजार रुपये की आर्थिक मदद की गई तथा इसके साथ ही उनके हुनर के अनुसार सिलाई की छोटी सी दुकान खोली गयी। सूरज जीविका ग्राम संगठन के द्वारा परिसंपत्ति के रूप में सिलाई मशीन एवं कपड़ा दिया गया। सिलाई की छोटी सी दुकान से गीता देवी की आर्थिक स्थिति में पहले की अपेक्षा कुछ सुधार होने लगा लेकिन दीदी चाहती थी कि इस व्यवसाय को और बड़ा करे, जिसमें वह सफल भी रहीं।

अपने मेहनत के कारण आज गीता देवी प्रति माह चार से पांच हजार रूपये की आमदनी कर पा रही हैं, जिससे इनके परिवार का भरण–पोषण काफी बेहतर तरीके से हो रहा है एवं बच्चों की पढ़ाई भी शुरू हो चुकी है। गीता देवी की इच्छा है कि परियोजना से दिए जाने वाले प्रशिक्षण और पूंजी के रूप में मदद से इस दुकान में रेडीमेड कपड़े भी रखेंगी जिससे उनकी आमदनी में और बढ़ोतरी होगी।

सतत् जीविकोपार्जन योजना
जिला एवं राज्य स्तरीय गतिविधियां

एसजेवाई लाभार्थियों ने आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाया कदम

बिहार सरकार की महत्वकांक्षी सतत् जीविकोपार्जन योजना ने गरीबी उन्मूलन एवं ग्रामीण महिलाओं एवं उनके परिवारों के आर्थिक स्वावलंबन एवं सशक्तीकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सरस मेला 2022 का आयोजन इन महिलाओं के स्वावलंबन में उत्प्रेरक का काम कर रही है। विभिन्न जिलों से सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत लाभान्वित कुल 10 लाभार्थियों ने दिसंबर 2022 में आयोजित सरस मेले में विक्रेता के तौर पर भाग लिया। एसजेवाई अंतर्गत बांका का प्रसिद्ध कतरनी चावल एवं चुड़ा, मधेपुरा एवं मुंगेर से बांस उत्पाद, रोहतास से जयपुर कला पर आधारित चूड़ी उत्पाद, गोपालगंज से हाथ से रंगी चादर एवं मुंगेर से झाड़ू, पटना के सम्पतचक गाँव का चाय स्टॉल लगाकर भाग लिया। सरस मेला के दौरान 15 दिनों में इन दीदियों ने 5 लाख रूपये से ज्यादा के उत्पाद की बिक्री की।

आत्मविश्वास की अनोखी गाथा

सीता देवी सारण जिले के एकमा प्रखंड की रहने वाली हैं। शराब उत्पाद एवं बिक्री से जुड़े परिवारों को वैकल्पिक आजीविका प्रदान करने के उद्देश्य से सतत् जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत सीता देवी को बजरंग बली जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा चयन किया गया। पारंपरिक रूप से घरेलू स्तर पर स्वयं के उपयोग के लिए वह सिक्की के विभिन्न उत्पाद बनाने में माहिर हैं। इसे देखते हुए सूक्ष्म व्यवसाय हेतु उन्हें सिक्की कला पर आधारित क्षमतावर्धन एवं आजीविका संवर्धन विषयों पर योजना अंतर्गत प्रशिक्षित किया गया। इन्होंने आजीविका में विविधता लाने हेतु बकरी पालन की भी शुरुआत की। इस वर्ष पहली बार सीता देवी अपने गाँव से बाहर निकल कर पटना में आयोजित सरस मेला में सिक्की उत्पाद की बिक्री हेतु शामिल हुई। वह आगे कहती हैं कि ' मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे विक्रेता के तौर पर 15 दिन के लिए स्टॉल लगाने का अवसर मिला। आगे होन वाले मेले में अधिक तैयारी के साथ भाग लूँगी।

बकरी बैंक क्लस्टर का गठन

रोहतास के नौहाता प्रखंड में 15 दिसंबर, 2022 को बकरी बैंक क्लस्टर की शुरुआत की गई है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के 53 परिवारों को एकजुट कर इस क्लस्टर की स्थापना की गई है। इस पहल से रोहतास एवं आस–पास के शहरों जैसे गया, वाराणसी, कैमूर के ग्राहकों को आकर्षित किया जाएगा। इस समन्वित अभिगम अंतर्गत मनरेगा के तहत बकरी शेड, पशु सखी सेवा प्रावधान एवं वैक्सीन सेंटर की शुरुआत की जाएगी। इस हस्तक्षेप से महिलाओं को पशुपालन के माध्यम से उद्यमी बनने में मदद मिलेगी। एक सक्षम वातावरण बनाने में यह इंटीग्रेटेड क्लस्टर पहल महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इससे वित्तीय, कौशल और बाजार के वातावरण को मजबूती मिलेगी, जिसका लाभ सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़े इस क्लस्टर के सभी परिवारों को मिलेगा।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री अजीत रंजन – राज्य परियोजना प्रबंधक (अनुश्रवण एवं मूल्यांकन)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)
- श्री रतिस मोहन परियोजना प्रबंधक (सामाजिक सुरक्षा)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, सिवान
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार